यह सुखद है कि पाकिस्तान की विपक्षी पार्टियां अब एकजुट होकर फौज के खिलाफ मुखर हो रही हैं। अगर उनका आंदोलन वाकई गति पकड़ता है, तो उसका अवाम पर व्यापक असर होगा। यह न सिर्फ पाकिस्तान की जहूरियत के लिए, बल्कि भारत और तमाम अमन-पसंद मुल्कों के लिए राहत की बात होगी। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने कभी कहा था कि दुनिया में घटने वाली आतंकी घटनाओं में से 70 फीसदी के तार पाकिस्तान से ही जुड़ते हैं। यह बात आज भी उतनी ही सच है। इसका एहसास पाकिस्तानियों को कराया जाना चाहिए। अगर हम पाकिस्तानी अवाम में इसे लेकर शर्म और फिक्र पैदा कर सके, तो यकीनन आतंकवाद पर हम एक कड़ी चोट करेंगे।

सजा भी जालसाजी का हिस्सा

राजीव डोगरा,पूर्व राजदूत

प्रतिबंधित आतंकी संगठन जमात-उद-दावा प्रमुख और साल 2008 के मुंबई हमले का मास्टरमाइंड हाफिज सईद को आतंकी फंडिंग से जुड़े दो मामलों में 10 साल की सजा सुनाई गई है। कहा जा रहा है कि फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) व अमेरिका के संयुक्त दबाव का यह नतीजा है। तर्क यह भी दिया जा रहा है कि हाफिज सईद के बहाने पाकिस्तान विश्व में अपनी छवि चमकाने की कोशिश कर रहा है। मगर क्या यह पूरी सच्चाई है? क्या वाकई पाकिस्तान की रीति-नीति इस कदर बदल गई है कि वह अपनी संतति पर चोट करने को तैयार है?

मुझे तो ऐसा नहीं लगता। पाकिस्तान निगाहें कहीं और रखता है, और निशाना कहीं और साधता है। 1947 से वह इसी रास्ते पर चल रहा है। वह कुछ जुमले उछाल देता है, और पूरी दुनिया उसके शब्दजाल में फंस जाती है। तमाम कूटनीतिज्ञ इसी सोच में डूबते-उतराते रहते हैं कि उसका इशारा किस तरफ था या उसका मतलब क्या था, और इस चक्कर में वे मुख्य मुद्दे से भटक जाते हैं। इससे दुनिया को झांसा देने का पाकिस्तान का मकसद पूरा हो जाता है। हाफिज सईद की सजा भी उसकी इसी जालसाजी का हिस्सा है। इसमें यह तो दावा किया जा रहा है कि इस आतंकी सरगना को कैद के साथ आर्थिक जुर्माना सुनाया गया है और उसकी संपत्ति भी जब्त की जाएगी, मगर इस बात का खुलासा नहीं हुआ है कि यह सजा किन मामलों में हुई है और उसकी कितनी संपत्ति कुर्क की जाएगी? बीते फरवरी महीने में भी तो उसे ऐसे ही मामलों में 11 साल की सजा मिली थी। ज्यादा दूर नहीं, पिछले चार-पांच वर्षों से ही यदि पाकिस्तान के हालात पर गौर करें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हाफिज सईद को पाकिस्तानी 'डीप स्टेट' (जहूरी हुकूमत पर पकड़ रखने वाला फौजी व खुफिया अधिकारियों का गुट) चुका हुआ मानने लगा था। अपने ऊपर मंडराते खतरे को भांपकर फौज को खुश करने के लिए ही उसने तत्कालीन वजीर-ए-आजम नवाज शरीफ की आलोचना शुरू कर दी थी। हमें तभी समझ लेना चाहिए था कि उसकी उपयोगिता अब खत्म हो गई है। मगर न हम तब असलियत समझ सके, और न आज सच्चाई समझना चाहते हैं। इसीलिए हाफिज सईद की सजा पाकिस्तानी न्यायपालिका की जीत कतई नहीं है।

दिक्कत यह है कि पाकिस्तान बार-बार चक्रव्यूह बनाता है और हम उसमें फंसकर मुख्य मसले से भटक जाते हैं। अभी भी हमारे लिए बड़ी समस्या जमात-उद-दावा नहीं, वहां की खुफिया एजेंसी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) होनी चाहिए। हाफिज सईद तो सिर्फ एक मोहरा है, जो अपने भाषणों से नौजवानों को भारत के खिलाफ भड़काता है और दहशतगर्दी फैलाने के लिए उन्हें यहां भेज देता है। उसकी असली डोर तो आईएसआई के हाथों में है, जिसका तत्कालीन प्रमुख अहमद शुजा पाशा रावलपिंडी में बैठकर नवंबर, 2008 के मुंबई हमले को अमलीजामा पहना रहा था। जब उसे सजा मिलेगी, तभी असली इंसाफ हो सकेगा। लिहाजा, जैश-ए-मोह मद, लश्कर-ए-तैयबा, जमात-उद-दावा जैसे संगठनों को घेरने के बजाय हमें इनको गढ़ने वाली आईएसआई पर हमलावर होना चाहिए। उसको बेनकाब करने की रणनीति हमें ज्यादा फायदा पहुंचाएगी।

अच्छी बात यह है कि केंद्र सरकार इसे लेकर अब थोड़ी-बहुत संजीदा दिख रही है। मुझे याद है कि लाल किले के प्राचीर से हमारे एक प्रधानमंत्री ने कभी कहा था कि दहशतगर्दी में पाकिस्तान का सत्ता प्रतिष्ठान शामिल नहीं है, बल्कि वहां के 'नॉन-स्टेट एक्टर्स' (हुकूमत से अलग काम करने वाले मजहबी, गैर-सियासी गुट आदि) की ये करतूतें

हैं। मगर आज हम बखूबी समझते हैं कि वहां के 'नॉन-स्टेट एक्टर्स' आखिरकार किससे नियंत्रित होते हैं, और किनके कहने पर वे दुनिया भर में आतंकी गतिविधियों को अंजाम देते हैं। उनको बेपरदा करने का काम हमारी सेना और खुफिया व सुरक्षा एजेंसियां कर सकती हैं। हमें उनका सहयोग करना चाहिए।

इसमें सोशल मीडिया भी हमारे काम आ सकता है। हम इसके माध्यम से पाकिस्तानी अवाम को जागरूक भी बना सकते हैं। जैसे, बीते कुछ महीनों में खैबर पतून वाह प्रांत में एक नारा खूब गूंज रहा है- यह जो दहशतगर्दी है, इसके पीछे वर्दी है। इसका मतलब है कि वहां के लोग अब यह समझने लगे हैं कि आतंकवादी नीतियों को पालने-पोसने का

नुकसान खुद उनके मुल्क को भी हो रहा है। वहां के लोगों की इस सोच को हम और व्यापक बना सकते हैं। उन्हें यह एहसास करा सकते हैं कि उन्हें तमाम वैश्विक प्रतिबंधों के कारण जो माली नुकसान हुआ है, उसकी मुख्य वजह उनके नीति-नियंताओं द्वारा दहशतगर्दी को पनाह देना है। संचार के हरसंभव साधनों से वहां के लोगों को हमें इस सच का बराबर एहसास कराते रहना चाहिए। यह करना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि कोई बाहरी ताकत पाकिस्तान में मौजूद आतंक की जड़ों को नहीं उखाड़ सकती। जब तक वहां के लोग खुद आगे नहीं आएंगे, पाकिस्तानी 'डीप-स्टेट' अपनी हरकतों से बाज नहीं आएगा। यह सुखद है कि पाकिस्तान की विपक्षी पार्टियां अब एकजुट होकर फौज के खिलाफ मुखर हो रही हैं। अगर उनका आंदोलन वाकई गति पकड़ता है, तो उसका अवाम पर व्यापक असर होगा। यह न सिर्फ पाकिस्तान की ज हूरियत के लिए, बल्कि भारत और तमाम अमन-पसंद मुल्कों के लिए राहत की बात होगी। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने कभी कहा था कि दुनिया में घटने वाली आतंकी घटनाओं में से 70 फीसदी के तार पाकिस्तान से ही जुड़ते हैं। यह बात आज भी उतनी ही सच है। इसका एहसास पाकिस्तानियों को कराया जाना चाहिए। अगर हम पाकिस्तानी अवाम में इसे लेकर शर्म और फिक्र पैदा कर सके, तो यकीनन आतंकवाद पर हम एक कड़ी चोट करेंगे।

हाफिज सईद : सजा देना पाकिस्तान की नई नौटंकी

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

भारत में आतंकवाद फैलाकर इन तथाकथित जिहादियों ने, पाकिस्तानी फौज और सरकार की जो सेवा की है, उसका पारितोषिक अब उन्हें जेल में मिलेगा। ज्यों ही पाकिस्तान भूरी से सफेद सूची में आया कि ये आतंकवादी रिहा हो जाएंगे। पाकिस्तान की जमात-उद-दावा के सरगना हाफिज सईद को 10 साल की जेल की सजा हो गई है। वह पहले से ही लाहौर में 11 साल की जेल काट रहा है। अब ये दोनों सजाएं साथ-साथ चलेंगी। ये सजाएं पाकिस्तान की ही अदालतों ने दी हैं। क्यों दी हैं ? क्योंकि पेरिस के अंतरराष्ट्रीय वित्तीय कोष संगठन ने पाकिस्तान का हुक्का-पानी बंद कर रखा है। उसने पाकिस्तान का नाम अपनी भूरी सूची में डाल रखा है, क्योंकि उसने सईद जैसे आतंकवादियों को अभी तक छुट्टा छोड़ रखा था। हाफिज सईद की गिरफ्तारी पर अमेरिका ने लगभग 75 करोड़ रु. का इनाम 2008 में घोषित किया था लेकिन वह 10-11 साल तक पाकिस्तान में खुला घूमता रहा। किसी सरकार की हिम्मत नहीं हुई कि वह उसे गिरफ्तार करती। दुनिया के मालदार मुल्कों के आगे पाकिस्तान के नेता भीख का कटोरा फैलाते रहे लेकिन मुफ्त के 75 करोड़ रु. लेना उन्होंने ठीक नहीं समझा। क्यों नहीं समझा ? इसीलिए कि हाफिज सईद तो उन्हीं का ख?ा किया गया पुतला था। जब मेरे-जैसा घनघोर राष्ट्रवादी भारतीय पत्रकार उसके घर में बे-रोक-टोक जा सकता था तो पाकिस्तान की पुलिस क्यों नहीं जा सकती थी ? अमेरिका ने जो 75 करोड़ रु. का पुरस्कार रखा था, वह भी किसी ढोंग से कम नहीं था। यदि वह ओसामा बिन लादेन को उसके गुप्त ठिकाने में घुसकर मार सकता था तो सईद को पकड़ना उसके लिए कौन-सी बड़ी बात थी? लेकिन सईद तो भारत में आतंक फैला रहा था।

अमेरिका को उससे कोई सीधा खतरा नहीं था। अब जबकि खुद पाकिस्तान की सरकार का हुक्का-पानी खतरे में पड़ा तो देखिए, उसने आनन-फानन सईद को अंदर कर दिया। सईद की यह गिरफ्तारी भी दुनिया को एक ढोंग ही मालूम पड़ रही है। सईद और उसके साथी जेल में जरूर रहेंगे लेकिन इमरान-सरकार के दामाद की तरह रहेंगे। अब उनके खाने-पीने, दवा-दारू और आने-जाने का खर्चा भी पाकिस्तान सरकार ही उठाएगी। उन्हें राजनीतिक कैदियों की सारी सुविधाएं मिलेंगी। आंदोलनकारी कैदी के रूप में मैं खुद कई बार जेल काट चुका हूं। जेल-जीवन के आनंद का क्या कहना ? भारत में आतंकवाद फैलाकर इन तथाकथित जिहादियों ने, पाकिस्तानी फौज और सरकार की जो सेवा की है, उसका पारितोषिक अब उन्हें जेल में मिलेगा। ज्यों ही पाकिस्तान भूरी से सफेद सूची में आया कि ये आतंकवादी रिहा हो जाएंगे। पाकिस्तानी आतंकवादियों के कारण पाकिस्तान सारी दुनिया में 'नापाकिस्तान' बन गया है और भारत और अफगानिस्तान से ज्यादा निर्दोष मुसलमान पाकिस्तान में मारे गए हैं।

न्यूज कार्नर

गर्भावस्था में झारखंड से परीक्षा देने ग्वालियर स्कूटी पर आई सोनी ने बेटे को दिया जन्म

ग्वालियर। झारखंड के गोड्डा जिले से ग्वालियर तक डीएलएड की परीक्षा देने 1176 किलोमीटर स्कूटी पर सफर करने वाले धनंजय व सोनी हेम्ब्रम को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। 1 सितंबर 2020 को डीएलएड अंतिम वर्ष की परीक्षा देने सोनी 6 महीने की गर्भावस्था में अपने पति सोनी हंसदा (मांझी) के साथ ग्वालियर आई थी। 21 नवंबर को सुबह सोनी ने गोड्डा के भागलपुर रोड स्थित निजी अस्पताल में बेटे को जन्म दिया। बच्चे की प्री-मिच्योर डिलेवरी हुई है, बच्चे का वजन (ढाई किलो) डॉक्टरों के मुताबिक कम है। बच्चा ऐहतियातन 4 दिन तक डॉक्टरों की देखरेख में अस्पताल में ही रहेगा। ट्रेनें बंद होने के कारण धनंजय ने गर्भवती पत्नी के साथ 1176 किमी का सफर स्कूटी से तय किया था। धनंजय पत्नी सोनी हेम्ब्रम के साथ गोड्डा जिले से तीन दिन स्कूटर पर सफर कर ग्वालियर पहुंचे थे। गोड्डा जिला बंगलादेश की सीमा से बमुश्किल 150 किलोमीटर दूर है। ऐसे में धनंजय ने करीब 1176 किमी स्कूटी चलाई और झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश के तमाम शहरों, गांव व कच्चे पक्के रास्तों से गुजरे। परीक्षा के लिए दंपति ने ग्वालियर में किराए से कमरा भी लिया था। गर्भवती पत्नी के साथ स्कूटी से तीन दिन का सफर करने का मामला सामने आने के बाद दंपति की मदद के लिए कई संगठन और लोग सामने आए थे।

इंजीनियरिंग के बाद भी नहीं मिली नौकरी, की खुदकुशी

जबलपुर। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के आठ वर्ष बाद भी एक अदद सरकारी नौकरी न मिलने की हताशा में 31 वर्षीय युवक ने आत्महत्या कर ली। युवक की लाश शनिवार को घर के आंगन स्थित कुएं में मिली। पिता बोले कि बेटा कहता था कि प्रदेश सरकार ने 60 से 62 की उम्र बढ़ाकर हमारे जैसे युवाओं के सपनों का गला घोंट दिया। कई प्रयासों के बावजूद नौकरी नहीं मिली, तो तनाव में रहने लगा था। उसकी मौत से पूरा परिवार सन्न है। रांझी पुलिस ने बताया कि मानेगांव आदर्श नगर निवासी फैक्ट्री से रिटायर गोविंद प्रसाद देशमुख के दो बेटों में छोटा सुरेंद्र देशमुख (31) ने 2012 में इंजीनियरिंग पूरी की थी। बड़ा भाई महेंद्र प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता है। सुरेंद्र ने जॉब पाने के लिए कई विभागों की परीक्षाएं दीं, लेकिन सफल नहीं हुआ। सरकारी जॉब नहीं मिलने से वह कुछ दिनों से तनाव में रहने लगा था।

मध्यप्रदेश

पुलिसकर्मियों ने रेलवे ठेकेदार की गाड़ी में रखवा दी अवैध अफीम

भाजपा विधायक सिसोदिया के ट्वीट के बाद मचा बवाल विधायक ने गृहमंत्री और डीजीपी को टैग कर किया ट्वीट छह पुलिसकर्मी निलंबित किए गए, दो टीआई लाइन हाजिर

नगर प्रतिनिधि, भोपाल

नीमच के आधा दर्जन पुलिसकर्मियों ने रेलवे ठेकेदार अक्षय गोयल की गाड़ी में अवैध अफीम रखवा दी थी। पुलिस गोयल को पकड़कर थाने ले गई और परिजनों ने अपहरण की शिकायत थाने में करा दी। तब भी मामले से पर्दा नहीं उठा। असलियत तब सामने आई, जब मंदसौर के भाजपा विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया ने गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा और पुलिस महानिदेशक विवेक कुमार जौहरी को टैग कर ट्वीट किया। भाजपा विधायक के ट्वीट और उस पर मचे बवाल के बाद आला अफसर हरकत में आए। उसके बाद एक थानेदार समेत आधा दर्जन पुलिसकर्मी निलंबित कर दिए गए और दो थाना प्रभारियों को लाइन भेजा गया है। यह सनसनीखेज मामला नीमच जिले का है। गोयल नीमच शहर के रहने वाले हैं, लेकिन कार्रवाई जावद और रतनगढ़ की पुलिस ने की है। दरअसल, गोयल नीमच के एक क्लब में बैडमिंटन खेलने गए थे। वे बैडमिंटन खेल रहे थे, तब उनकी कार बाहर खड़ी थी। पुलिस का दावा है कि पुलिसकर्मियों ने मुखबिर की सूचना पर लोकेश मालवीय, श्याम भांबी और राकेश को एक किलो अफीम के साथ गिरफ्तार किया था। आरोपियों ने खुद को बचाने के लिए अफीम गोयल की गाड़ी में रख दी थी। भाजपा विधायक का आरोप है कि संभ्रांत व्यापारी की गाड़ी में अफीम रखवाने का काम पुलिसकर्मियों ने किया है। व्यापारी को इसकी जानकारी नहीं थी। पुलिस व्यापारी को पकड़ कर थाने ले गई और व्यापारी को अफीम तस्करी के नाम पर उलझाना चाहती थी। जब वे घर नहीं पहुंचे, तब परिजनों ने थाने में शिकायत की। परिजनों ने कहा कि वे घर से बैडमिंटन खेलने का कहकर गए थे और लौटकर नहीं आए। कहानी में नया मोड़ तब आया, जब गोयल के परिजनों ने नीमच की जगह मंदसौर के भाजपा विधायक से मदद मांगी। विधायक ने ट्वीट किया और उसके बाद पुलिस के अधिकारी हरकत में आए। अधिकारियों का कहना है कि मुखबिर की सूचना पर पुलिसकर्मी अफीम पकड़ने के लिए गए थे। मजेदार बात तो यह कि एक-दो नहीं, बल्कि जावद और रतनगढ़ समेत चार थानों की पुलिस को एक साथ मुखबिर ने सूचना दी और चारों थानों की पुलिस आरोपियों को पकड़ने के लिए नीमच पहुंच गई। अधिकारियों को मातहतों पर कार्रवाई करने में भी वक्त लगा। पहले आदेश में एक थानेदार समेत पांच पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया। फिर जावद थाना प्रभारी ओमप्रकाश मिश्रा को लाइन भेजा गया। उसके बाद रतनगढ़ थाना प्रभारी संदीप सिंह तोमर को लाइन भेजा गया। बवाल के बाद पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया और गोयल को छोड़ दिया।

ये बोले एसपी : नीमच एसपी मनोज कुमार राय ने कहा है कि पुलिस ने अफीम के साथ जिन तीन आरोपियों को पकड़ा है, उन्होंने गोयल को फंसाने की कोशिश की थी। तीनों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर की गई है। जांच में तथ्य सामने आने के बाद गोयल को छोड़ दिया गया है। अपने थाना प्रभारी को जानकारी नहीं देकर सीधे अफीम पकड़ने के लिए जाने वाले पुलिसकर्मियों के व्यवहार को कदाचरण मानकर निलंबित किया गया है। मातहतों पर नियंत्रण नहीं होने के कारण टीआई हटाए गए हैं।

मुख्तियार के 15 अवैध निर्माणों को किया ध्वस्त

एक लड़के का मुंह कमोड में डालकर निर्वस्त्र कर पीटने के बाद आया था चर्चा में

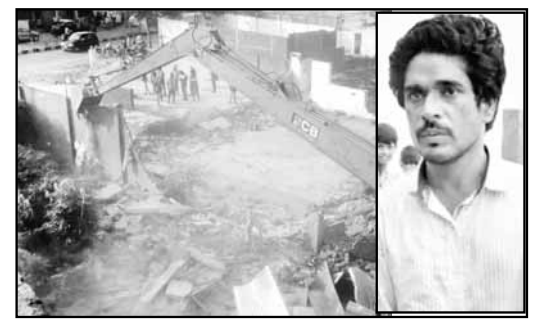

इंदौर। पुलिस-प्रशासन ने निगम की टीम के साथ मिलकर शनिवार को विजय नगर थाना क्षेत्र के हिस्ट्रीशीटर शेख मुख्तियार के 15 अवैध निर्माणों को ध्वस्त कर दिया। एक साल पहले 17 साल के लड़के का मुंह कमोड में डालकर निर्वस्त्र कर पीटने के बाद मुख्तियार चर्चा में आया था। तब मुख्तियार के 22 अवैध निर्माण को जिला प्रशासन और नगर निगम की टीम ने जमींदोज कर दिया था। गुंडे ने 10 साल में 50 करोड़ की 70 हजार वर्गफीट जमीन पर कब्जा कर लिया था। उज्जैन जिले के बड़नगर का रहने वाला मुख्तियार एक रेप के मामले में फरार होकर 2003 में इंदौर आ गया। पेट पालने के लिए उसने यहां रंगाई-पुताई शुरू कर दी। इस दौरान उसने जमीनों के सौदे और अवैध रूप से जमीनों पर कब्जे करने की ओर कदम बढ़ा दिया। 16 साल का होते-होते वह कुख्यात भू-माफिया बन चुका था। उसने अपना रुतबा ऐसा बनाया कि विजय नगर पुलिस थाना उसके इशारों पर घूमने लगा। उसके खिलाफ यहां शिकायतें सुनी ही नहीं जाती थीं, उलटा शिकायतकर्ता को ही पुलिस द्वारा धमकाया जाता था। कांग्रेस और भाजपा नेताओं से संबंधों का रौब जमाते हुए वह कई बार थाने पर बैठा दिख जाया करता था। 25 से ज्यादा केसों में अपराधी मुख्तियार ने पुलिस से सांठगांठ कर अवैध साम्राज्य खड़ा कर लिया था।

विदिशा में यूथ कांग्रेस में नियुक्ति को लेकर दो विधायक आमने-सामने

सोशल मीडिया पर सामने आई कांग्रेस की अंतर्कलह

कार्यालय प्रतिनिधि, भोपाल। विदिशा में यूथ कांग्रेस में एक नियुक्ति को लेकर कांग्रेस के दो विधायक आमने-सामने आ गए हैं। ये नियुक्ति यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष कुणाल चौधरी ने की थी। इस पर विदिशा के कांग्रेस विधायक शशांक भार्गव ने आपत्ति जताई है। उनका दर्द सोशल मीडिया पोस्ट में सामने आया है। हालांकि कुणाल चौधरी का कहना है कि नियुक्तियां करना संगठन का काम है और इसमें किसी को बताने जैसी कोई बात नहीं थी। संगठन तो अपना काम करता है।

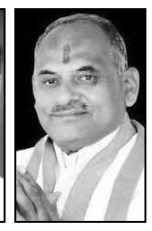

कांग्रेस विधायक शशांक भार्गव की पोस्ट : असल में, हाल में यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष कुणाल चौधरी ने विदिशा के शैलेंद्र पटेल को यूथ कांग्रेस का राज्य सचिव नियुक्त किया था। इस पर विदिशा से कांग्रेस विधायक शशांक भार्गव ने कुणाल चौधरी को संबोधित करते हुए एक पोस्ट लिखी है, जिसमें उन्होंने कहा कि विदिशा में की गई नियुक्तियों के पहले उन्हें जानकारी दे दिया करें। उन्होंने कहा है कि उन्हें यहां पर नियुक्ति करने से पहले जानकारी क्यों नहीं दी जाती। हालांकि शशांक भार्गव की ये पोस्ट अब उनके पेज पर नहीं मिल रही है।

पोस्ट में लिखा- मिस कम्युनिकेशन को दूर करें, जिससे विवाद न हो : शशांक भार्गव ने लिखा- विदिशा में शैलेंद्र पटेल की नियुक्ति के संबंध में आपसे चर्चा हुई, वह अच्छा साथी है लेकिन मैंने आपसे निवेदन किया था कि अगर आपने विदिशा में कोई नियुक्ति की है तो मुझे भी इसकी जानकारी दे दिया करें, लेकिन आपने कहा कि आपके द्वारा इनकी नियुक्ति नहीं दी गई है। ओझा जी द्वारा की गई है। मैंने ओझा जी से बात की और उनसे निवेदन किया कि हमें भी नियुक्ति करने से पहले जानकारी दे दिया करें ताकि हम उनका स्वागत कर सकें, लेकिन बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आपने किसी तरह की बात छोटे भाइयों से कहीं, अब छोटे भाइयों को मेरे बारे में इस तरह पोस्ट लिखना पड़ रही है। आप अच्छी तरह जानते हैं कि विदिशा में इन्हीं सब छोटे भाइयों की कृपा से मैं विधायक बना हूं। आपने उनसे क्या चर्चा की लेकिन उन्हें जो भी हुआ है उसको दूर कर हमारे बीच विवाद पैदा होने से रोकें। उम्मीद करता हूं कि आप से मेरी जो चर्चा हुई है उसे मेरे छोटे भाइयों को पहुंचाने की कृपा करें।

एसजीएमएच में चिकित्सकों के साथ मारपीट, तोड़फोड़

रीवा। संजय गांधी अस्पताल में शुक्रवार रात सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को लेकर पहुंचे दर्जनभर से अधिक युवकों ने ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों के साथ गाली गलौज और मारपीट कर दी। इससे अस्पताल में अफरा-तफरी मच गई। घटना की जानकारी लगते ही अन्य चिकित्सक व स्टाफ के लोग पहुंचे और बीच-बचाव किया। इसके बाद भी नशे में चूर युवकों ने इमरजेंसी वार्ड में तोड़फोड़ कर शासकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाया। विवाद बढ़ता देख चिकित्सकों ने पुलिस को सूचना दी। कुछ देर बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर चार युवकों को हिरासत में लेकर मेडिकल कराया, जिसमें सभी नशे में धुत मिले। पुलिस ने मामले में 151 की कार्रवाई की है। वहीं घायल युवक का उपचार अस्पताल में चल रहा है। शुक्रवार रात 11 बजे अनीस मिश्रा नाम के युवक का समान थाना क्षेत्र के रतहरा में एक्सीडेंट हो गया था। युवक को एक दर्जन साथी उसे लेकर इलाज के लिए संजय गांधी अस्पताल पहुंचे थे। इमरजेंसी वार्ड में चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर युवक की हालत गंभीर होने पर उसे आईसीयू में भर्ती किया। युवक के साथ आए लोग चिकित्सकों से लेटलतीफी और दूसरे मरीजों को छोड़कर अपने मरीज को देखने को लेकर विवाद करने लगे।

कमिश्नर-कलेक्टर कार्यालय के गेट पर धारा-144 लागू

रीवा। जिला दण्डाधिकारी डॉ. इलैयाराजा टी ने ज्ञापन देने वाले संगठन, दलों एवं व्यक्ति को कमिश्नर कार्यालय व कलेक्टर कार्यालय के गेट पर एकत्रित होना प्रतिबंधित कर दिया है। दंडाधिकारी ने दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के तहत जारी आदेश में कहा है कि आयुक्त कार्यालय एवं कलेक्टर कार्यालय में विभिन्न राजनैतिक दलों एवं संगठनों द्वारा ज्ञापन प्रस्तुत किए जाने के समय जाम की स्थिति निर्मित हो जाती है, जिससे जिला एवं तहसील कार्यालय से संबंधित आमजनों को आने जाने में असुविधा होती है तथा शासकीय कार्य प्रभावित होता है। दोनों अधिकारियों की अनुपस्थिति में कलेक्टर कार्यालय में उपस्थित डिप्टी कलेक्टर को ज्ञापन देने के लिए अधिकृत किया गया है।